जैनेन्द्र की कहानियों में स्त्री और प्रकृति का स्वरूप

सत्यम भारती *

शोध सारांश

स्त्री और प्रकृति दोनों का मानवीय सभ्यता को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है, लेकिन दोनों के साथ समाज में भेदभाव होता रहा है। जैनेन्द्र की कहानियाँ स्त्री और प्रकृति के साथ होने वाले भेदभाव और उनके संघर्षपूर्ण जीवन का मुखरित दस्तावेज है। वैवाहिक संस्था और पुरुषवादी मानसिकता के पीछे स्त्रियों का शोषण हो रहा है तो वहीं मानवों की अतृप्त इच्छाओं की वजह से प्रकृति का दोहन हो रहा है। जैनेन्द्र अपनी कहानियों में स्त्री और प्रकृति के शोषण तंत्र को न केवल उजागर करते हैं बल्कि उनके विध्वंसकारी रूप का भी चित्र प्रस्तुत करते हैं। मेरे शोध आलेख का उद्देश्य जैनेन्द्र की कहानियों में वर्णित प्रकृति और स्त्री के स्वरुप को तलाशना है। प्रकृति और स्त्री का प्रश्न वर्तमान समय में काफी प्रासंगिक और विचार योग्य है।

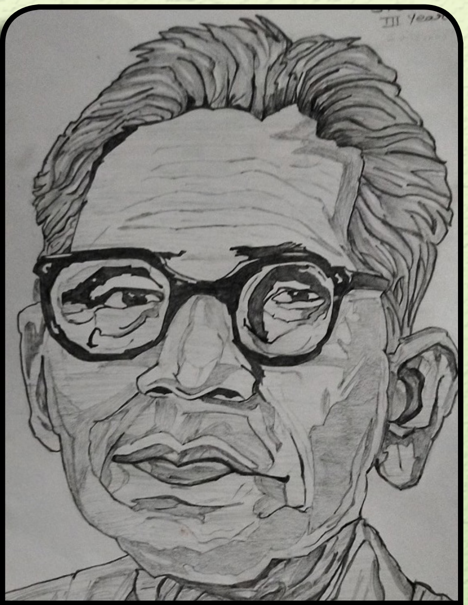

सोनाली कुमारी,
एनसीडब्ल्यूईबी, मैत्रेयी कॉलेज

प्रमुख शब्द

पुरातन रूढ़ियाँ, मनोवैज्ञानिक सत्य, यथार्थपूर्ण अनुभूति, त्रिगुणात्मक प्रेम, वैवाहिक संस्था, हीन ग्रंथि, वैयक्तिक अनुभूति, अहं का विगलन, आवेग, वासना, प्रदूषण, वैश्विक तापन, जलवायु परिवर्तन, अम्लीय वर्षा, पर्णकुटी, वात्सल्य सुख, प्रकृति का प्रतिशोध, सहचरी, आपसी सौहार्द, वेदांत दर्शन, प्राकृतिक परिवेश, जीवन दर्शन, पर्यावरण आदि।

शोध आलेख

जैनेंद्र हिंदी कथा साहित्य जगत के उन महान रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने न केवल कथा में व्यक्ति सत्ता की स्थापना की बल्कि सामाजिक जागरण, पुरातन रूढ़ियाँ, पुरुषवादी मानसिकता, सामंती जकड़न, स्त्री-पुरुष संबंध आदि समसामयिक मुद्दों को भी कहानी का विषय बनाया है। उनके कहानियों के केंद्र में अस्मिता और मुक्ति का सवाल है। जैनेंद्र की कहानियों में उनका मूल चिंतन- मानवीय संबंधों को उजागर करना, जीवन के व्यवहारिक संबंध तथा मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित है। उनका हर पात्र अंतर्द्वन्द से घिरा है तथा जीवन के यथार्थ से टकराता नजर आता है। जैनेंद्र की कहानी चेखव की कहानियों की तरह खामोश तल्खियत के साथ पेश होती है; उदाहरण के लिए 'जान्हवी' कहानी। इनकी कहानियों की विषय वस्तु काफी विस्तृत है, एक ओर जहाँ 'पाजेब' एवं 'खेल' कहानी में बाल मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है तो वहीं 'तत्सत' कहानी में प्रकृति वर्णन के साथ साथ लोक तत्वों का भी दर्शन होता है। जान्हवी, त्रिवेणी, पत्नी आदि कहानी में जहाँ प्रेम की उदात्तता, स्त्री-पुरुष संबंध तथा प्रेम संबंधों के विविध रूप दिखते हैं तो वहीं 'नीलम देश की राजकन्या' में फेंटेसी के बीच अकेलापन एवं पिया मिलन की आतुरता

* शोधार्थी, हिन्दी साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

 ISSN 2581-9917

प्रदर्शित होती है। 'ग्रामोफोन का रिकॉर्ड' जहाँ कामकाजी स्त्री-पुरुषों के अंतर्संबंधों को प्रदर्शित करती है तो वहीं 'घुंघरू' कहानी में त्रिगुणात्मक एवं समर्पित प्रेम का चित्रण मिलता है।

जैनेंद्र की कहानियों की स्त्री पात्र रिश्तों की बुनियाद सच्चाई की तराजू पर तौलना और परखना चाहती है। वह किसी के साथ छलावा नहीं करती है। इनकी अधिकांश कहानी मनोवैज्ञानिक पुट लिए मानव के अंतर्मन की व्यथा, दुख, साहस एवं संघर्षो से उत्पन्न ग्लानि, असंतोष, कुंठा, क्षोभ एवं अंतर्द्वंद का वर्णन करती है। इनकी हर कहानी संवेदना के स्तर से गहरे उतर कर मन को चकित, व्यथित एवं व्यंजित करती है। कहानियों में कम पात्रों का प्रयोग कर वे वैयक्तिक अनुभूतियों का सहजता के साथ प्रदर्शन कर पाते हैं और दो पात्रों के बीच तनाव उत्पन्न कर नाटकीयता भी उत्पन्न करते हैं। जैनेंद्र यथार्थवादी लेखक हैं, इसलिए उनकी कहानियों में सामाजिक समस्याओं का वर्णन तथा वर्तमान के प्रति तल्खी दिखाई देती है। कमलेश्वर लिखते हैं - ''जैनेंद्र यथार्थ की रचना करते थे। उनकी बहुसंख्यक कथा रचना की मूल जड़ें यथार्थ की धरती में फैली हुई थी और वहीं से अपनी शक्ति ग्रहण करती थी। वे मानवीय मूल्यों की अवधारणा के बीच व्यक्ति में सत्य को भी खंडित होने से बचा रहे थे।''(1)

प्रेमचंद साहित्य में समाज को स्थान स्थापित करने का प्रयास करते हैं तो वहीं जैनेंद्र समाज का सहारा लेकर साहित्य के केंद्र में व्यक्ति की सत्ता, समस्या, संघर्ष, मुक्ति, चुनौती एवं चाहत को स्थापित करने का सफल प्रयास करते हैं। वैवाहिक संस्था, हिंदू समाज की कुरीतियाँ, स्त्रियों की व्याकुलता, पुरुषवादी बेड़ियों आदि के खिलाफ आक्रोश की भावना इनकी कहानियों का मुख्य ध्येय रहा है। आगे हम इस आलेख में जैनेंद्र की प्रमुख कहानियों को आधार बनाकर उसमे वर्णित स्त्री की समस्या, चुनौतियाँ, निदान के उपाय, प्रेम के विविध रूप, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रकृति के विविध रूप, स्त्री-प्रकृति का अंतर्संबंध आदि जैसे विषयों से रूबरू होंगे।

''जैनेंद्र कुमार की सबसे बड़ी देन है, स्त्री की सामाजिक स्थिति और नियति की परिभाषा। स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर तो जैनेंद्र कुमार के पहले भी लोगों ने लिखा है लेकिन स्त्री की सामाजिक स्थिति पर और उनकी नियति पर सिर्फ एक ही लेखक ने लिखा है, हिंदी में वे हैं- जैनेंद्र कुमार।''(2) 'श्रीकांत वर्मा' का यह कथन जैनेंद्र की कहानियों में वर्णित स्त्री और पुरुषों के संबंधों एवं उसकी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है। समाज में स्त्रियों का शोषण पुरातन काल से ही होता आया है, उसका इस्तेमाल दान, धर्म, सेवा की वस्तु के रूप में किया गया। खुद स्त्रियों के मन में बनी हीन ग्रंथि उसे शोषण के अनुकूल बना देती है। 'पत्नी' कहानी में जो 'सुनंदा' अपने पति का विरोध करना चाहती है, लेकिन उसे फिर याद आता है कि वह तो स्त्री है और उसका जन्म पति की सेवा करने के लिए हुआ है। यही दशा 'त्यागपत्र की मृणाल' की भी है।

आवेग, वासना और अहम का विगलन जैनेंद्र की कहानियों का अभिष्ट है। इनकी कहानियाँ स्त्री- स्वातंत्र्य संबंधित नई दृष्टि देती है साथ ही साथ इनके पात्रों में एक विशेष प्रकार का आत्मोत्सर्ग पाया जाता है। खुद को न्योछावर कर देने के बल पर ही जैनेंद्र की नायिकाएं समाजिक कुरीतियों एवं रूढ़िगत परंपराओं के खिलाफ आक्रोश प्रकट कर पाती हैं। 'मास्टर जी' की श्यामकली, 'नीलम देश की राजकन्या' की राजकुमारी, जान्हवी आदि स्त्री पात्र आवेग, वासना, अहं से निजात पाने की कोशिश करती हैं। इनकी नायिकाओं के संदर्भ में मधुरेश लिखते हैं- ''उनकी नायिकाएं हाड़- मांस की की वास्तविक स्त्रियाँ नहीं हैं। प्रेम में से देह की सत्ता को, उसकी जैविक वास्तविकता को अलग करके, जैविक प्रेम में एक अशरीरी एवं अवास्तविक भाव सत्ता को घुला देते हैं। जब-तब उसे 'अहिंसा' के दर्शन से जोड़कर उसके मूल आवेग और थरथराहट को नकार कर वे उसे निर्जीव बना देते हैं।''(3) 'जान्हवी' अपने प्रेमी के वियोग में रोज अपने छत पर कौओं को बुलाकर उन्हें रोटी की मिस खिलाती है और कौओं के माध्यम से समाज को कह रही है कि तुम भले मेरा तन मन सब खा जाओ, लेकिन मेरी दो आंखें मत खाना,मुझे अपने पिया का चेहरा देखना है-

''कागा सब तन खाइयो
मेरा चुन-चुन खाइयो मांस
दो नयन मत खाइयो
मोहे पिया मिलन की आसा'' (4)

भारतीय समाज में स्त्रियों की दुर्दशा का प्रमुख कारण- शिक्षा का अभाव, परंपरागत सोच, परवरिश में होने वाला भेदभाव, गरीबी, स्वावलंबन का अभाव आदि है। 'पत्नी' कहानी की नायिका 'सुनंदा' पढ़ना चाहती है, लेकिन उसका पति उस पर ध्यान नहीं देता है। भले चाहे वह बाहर कितना भी समाज सुधार पर भाषण दे दे। यह बात आज भी प्रसांगिक है। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना चाहती है,पति के कंधे से कंधे मिलाना चाहती है- ''वह भारतमाता को समझना चाहती है पर उसको न भारतमाता समझ में आती है न स्वतंत्रता समझ में आती है।''(5) 'पत्नी' कहानी क्रांति के पीछे स्त्री संघर्ष कथा की अत्यंत संवेदनशील प्रस्तुति मानी जा सकती है। जैनेंद्र की तरह 'अज्ञेय' की कहानी 'गैंग्रीन' और अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' में भी स्त्री परतंत्रता और जहालत का वर्णन मिलता है, जहाँ महिलाओं की भावनाओं का कोई कदर नहीं है। वह केवल एक मशीन के रूप में चित्रित है, जिसे पुरुष जब चाहे ईंधन भर कर उपयोग एवं उपभोग कर सकता है।

जैनेंद्र स्त्रियों के प्रति बदलती मानसिक प्रवृत्तियों का चित्रण करते हैं। 'पत्नी' कहानी में 'सुनंदा' के ना बोलने पर 'कालिंदीचरण' नरम दल से गरम दल का हो जाता है। वहीं 'जान्हवी' के खत लिखकर मना करने पर, नायक तड़कता-भड़कता जीवन छोड़कर सादा जीवन जीने लगता है। उसे जान्हवी से नफरत नहीं होती है बल्कि उससे प्रेम होता है। समाज में आज भी देखा जाता है कि प्रेम की स्वीकृति नहीं है। खासकर महिलाओं को निर्णय लेने का कोई हक नहीं है। अगर कोई गलती से प्रेम का इजहार कर दें तो समाज उसे कुलच्छिनी का तमगा दे देता है। 'पाजेब' कहानी में लेखक 'पाजेब' को स्त्री का प्रतीक बनाकर लिखते हैं- ''पाजेब का मानो निज का आकार कुछ नहीं है, जिसमें पांव में बंधी उसी के अनुकूल रहती है।''(5) इनकी नायिकाएं वैवाहिक संस्था, हिंदू समाज की कुरीतियों से उलझती और मुठभेड़ करती नजर आती हैं। चाहे वह 'त्यागपत्र' की मृणाल हो, पत्नी की सुनंदा हो, जान्हवी हों, 'ग्रामोफोन का रिकार्ड' की विजया हो आदि। 'घुंघरू' कहानी में 'उर्मिला' कहती है - ''क्या मैं कमा नहीं सकती? आपको कुछ भी मालूम नहीं कपूर साहब। मैं रुपयों का ढेर लगा सकती हूँ। मैं.. मैं.. लेकिन छोड़िये, मैं पतिव्रता नारी हूँ। मैं मां हूँ। मैं गृहिणी हूँ। मैं रोटी बनाती हूँ, सफाई करती हूँ, बर्तन घिसती हूँ, कपड़े धोती हूँ, पति की पद रज लेती हूँ पर मैं मीरा नहीं हूँ, पतिव्रता हूँ।''(6)

स्त्रियों के शोषण की पृष्ठभूमि उनकी ऊपर की हम पीढ़ी जैसे- माँ, चाची, दादी, बुआ, बड़ी बहन आदि तैयार करती हैं। वह बात-बात पर कहती नजर आती हैं कि तुम लड़की हो, तुम यह काम नहीं कर सकती हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। 'पाजेब' कहानी में बुआ अपने भतीजे को समझाती हुई कहती है- ''छी..छी.. तू कोई लड़की है? जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं। लड़कियाँ रोती हैं। कहीं बाबू साहब लोग रोते हैं।''(7) घर में लड़का-लड़की की परवरिश में होने वाला भेदभाव ही उनके अंदर हीन ग्रंथि का निर्माण करता है। आज भी भारतीय समाज में यह विद्यमान है।

स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध रूप जैसे- प्रेमी-प्रेमिका के लिए 'जान्हवी' कहानी, त्रिगुणात्मक प्रेम के लिए 'घुंघरू' कहानी, समर्पित प्रेम के लिए 'ग्रामोफोन का रिकॉर्ड' कहानी, बाल मनोविज्ञान के लिए 'खेल' कहानी, गृहस्थ जीवन के लिए 'पत्नी' कहानी आदि। स्त्री-पुरुष संबंधों पर लेखक बड़ी तन्मयता से कलम चलाते हैं। नारी पुरुष की अपूर्णता तथा अंतर निर्भरता की भावना स्त्री-संघर्ष का मूल आधार है। वह अपने प्रेम और पुरुष के आकर्षण को समझती है और समर्पण के लिए प्रस्तुत रहती है। पूरक भावना की क्षमता से वह खुश भी होती है, परंतु कभी-कभी जब वह पुरुष में इस आकर्षण मोह का अभाव देखती है तब वह क्षुब्ध होती है, व्यथित होती है। प्रेमचंद स्त्रियों की मनोवृति के बारे में चांद पत्रिका में लिखते हैं- ''स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारूण से दारुण दुख, बड़ा से बड़ा संकट, अगर नहीं सह सकती है तो अपने यौवन काल की उमंगों का कुचला जाना।''(8)

जैनेंद्र की स्त्री पात्र बाह्य वातावरण, घटनाओं एवं परिस्थितियों से प्रभावित तो होती हैं लेकिन संचालित अंतर्मुखी गतियों से होती हैं या यूँ कहें तो कहानीकार ने कहानी को घटना के स्तर से ऊपर उठाकर चरित्र एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर लाने का प्रयास किया है। कहानीकार स्वतंत्रोत्तर भारत में भौतिकता की चमक, परिवार का बिखराव, धन की लोलुपता, विवाहेतर संबंध, गृहस्थ जीवन, प्रेम करने की छूट, स्त्री मुक्ति एवं संघर्ष को अपनी कथा में पिरोते हैं। जैनेंद्र की नायिकाएं विद्रोह नहीं करती हैं, वह सदगृहस्थ, नैतिकता और पुरुषों के लिए प्रेरणास्रोत बन कर रह जाती है।

जैनेंद्र की कहानियों में प्रकृति के विविध रूपों का सुंदर उदाहरण मिलता है। कहानीकार प्रकृति को प्रतीक के रूप में, दर्शन के रूप में, प्रकृति का बदलते मानवीय जीवन में महत्ता के रूप में प्रयोग करते हैं। वह प्रकृति को माता, सहचरी, प्रेयसी तथा वात्सल्य सुख के रूप में भी वर्णित करते हैं। कहानीकार के वेदांत दर्शन का प्रभाव खेल कहानी में, प्रकृति का विध्वंसकारी रूप 'नीलम देश की राजकन्या' में, स्वार्थमय मानवीय मनोवृत्ति का चित्रण 'तत्सत' कहानी में, प्रतीकात्मक रूप 'जान्हवी' कहानी में तथा फैंटेसी का प्रयोग 'नीलम देश की राजकन्या' कहानी में करते हैं। लेखक 'तत्सत' कहानी में शीशम, बबूल, बांस, घास, सिंह, शेर, सांप आदि के माध्यम से जंगल रुपी परिवार का निर्माण करते नजर आते हैं। जहाँ भाई, बहन, दादा, दादी, चाचा, चाची आदि का आपस में रिश्ता है। शीशम, बड़े दादा से मानवों की ओछी मानसिकता पर प्रश्न करते हुए तब 'तत्सत' कहानी में पूछता है-

शीशम- ''ये लोग इतने ही ओछे रहते हैं, ऊंचे नहीं उठते, क्यों दादा?''

बड़े दादा ने कहा- ''हमारी तुम्हारी तरह इनमें जड़े नहीं होती। बढ़े तो काहे पर? इससे वे इधर-उधर चलते रहते हैं, ऊपर की ओर बढ़ना उन्हें नहीं आता।''(9)

आधुनिकीकरण और मशीनीकरण के इस दौर में जब मानव अपना स्वार्थ साधने के लिए जंगलों को काट रहा है, खेतों में अट्टालिकाएं बना रहा है, पशु-पक्षियों का शिकार कर रहा है, जिसके बदले में प्रकृति ग्लोबल-वार्मिंग, प्रदूषण, अम्लीय वर्षा, जलवायु-परिवर्तन, बादल फटना, सुनामी, महामारी, भूकंप, वैश्विक तापन, ओजोन परत में छेद आदि जैसी समस्याएं दे रही हैं। इन सब के केंद्र में एक ही चीज है- स्वार्थी मानवीय मन एवं अतृप्त इच्छा। मानव की इसी मानसिकता पर कटाक्ष करते हुए 'तत्सत' कहानी में सिंह कहता है- ''आदमी को मैं खूब जानता हूँ। मैं उसे खाना पसंद करता हूँ। उसका मांस मुलायम होता है, लेकिन वह चालाक जीव है। उसको मुंह मार कर खा डालो, तब तो अच्छा है, नहीं तो उसका भरोसा नहीं करना चाहिए। उसकी बात बात में धोखा है।''(10)

प्रकृति का प्रतिरोधात्मक रूप हमें 'तत्सत एवं 'नीलम देश की राजकन्या' कहानी में भी देखने के लिए मिलता है। इस धरती पर हर जीव का स्थान है, लेकिन मानव सिर्फ अपना ही घर बनाना चाहता है, फिर प्रकृति प्रतिशोध लेगी ही। 'नीलम देश की राजकन्या' कहानी में प्रकृति का विनाशकारी रूप कुछ इस तरह देखने के लिए मिलता है- ''चारों ओर होता हुआ अट्टहास चीख का रूप धर उठा। मानों सहस्त्रों कंकाल दांत किटकिट कर विकट रूप में गर्जन कर रहे हैं। हवा प्रचंड हो उठी। समूह दुर्दांत रूप से महल पर फन पटक पटक कर फूंफकार करने लगा। जान पड़ा, सब विध्वंस हो जाएगा।''(11) प्रकृति और स्त्री हमेशा पुरुषों के साथ स्नेहिल व्यवहार ही करती आयी है और बदले में हमने हमेशा उन्हें हानि पहुंचाई है। दोनों का कर्ज मानवों के जीवन पर उधार है।

स्त्री और प्रकृति का समन्वित रूप देखें तो दोनों वात्सल्य सुख के लिए दूसरे के समान नजर आती है। एक स्त्री के विविध रूप होते हैं- माँ, बहन, प्रेयसी, पत्नी, दोस्त आदि। वह न केवल पुरुषों का पालन पोषण करती है बल्कि उसके साथ स्नेहिल व्यवहार कर उसे पूर्ण बनाती है। हर इच्छा की पूर्ति करती है। ठीक उसी तरह प्रकृति भी मानवों की हर जरूरत की चीजों को प्रेम पूर्वक अर्पित करती है। जैनेंद्र की स्त्री नायिका आशावान है, वह मरना नहीं चाहती है। ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी मानवों की स्वार्थमय प्रवृत्ति से आहत होकर विध्वंसक रूप धारण कर जीवनलीला समाप्त नहीं करना चाहती। वह मानवों को समय-समय पर विनाश

लीला दिखाकर चेत जाने की सलाह देती है। जैनेंद्र की स्त्री पात्र अपने मन की व्यथा को मन ही मन महसूस करती है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी मन की व्यथा को मन में ही जमींदोज कर देती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जैनेंद्र की कहानियों में वर्णित प्रकृति और स्त्री के विविध रूप चुनौती, संघर्ष, समझौता तथा मुक्ति के प्रश्नों से जूझता नजर आते हैं। जैनेंद्र बड़ी तन्मयता के साथ दोनों की समस्याओं और संघर्ष गाथा का उल्लेख करते हैं और पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। स्त्री और प्रकृति के मानवों पर इतने एहसान होने के बावजूद भी, उसके साथ होने वाले भेदभाव और शोषण चक्र से जैनेंद्र काफी क्षुब्ध नजर आते हैं। जैनेंद्र की कहानियों में स्त्री और प्रकृति दोनों हाशिये पर हैं और मुक्ति की राह तलाश रहे हैं। जैनेंद्र हिंदी कहानियों में अपना अलग पथ का निर्माण करते हैं, वर्षो से शोषित होने वाले पात्रों को अपनी कहानी का मुख्य विषय बनना ही उन्हें और कहानिकारों से अलग करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. साक्षी है पीढ़ियाँ : कुमार जैनेन्द्र, पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली,1989 भूमिका से (कमलेश्वर)
2. जंगल की आवाज : जैनेन्द्र कुमार, हिंदी बुक सेन्टर नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या 40
3. हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश, सुमित प्रकाशन नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ संख्या 41
4. जैनेन्द्र रचनावली, संपादक- निर्मला जैन, खंड 04, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या 501
5. https://www-femina-in/hindi/sahitya/kahani/patni&by&jainendra&kumar&5354-html5:25] 5/17/2022
6. वही पृष्ठ संख्या 453
7. वही पृष्ठ संख्या 163
8. http://premchand-co-in/story/narak&ka&marg çsepan] 5@17@2022] 5%32
9. 23 हिंदी कहानियाँ : संपादक- जैनेन्द्र कुमार, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ संख्या- 155
10. 23 हिंदी कहानियाँ : संपादक- जैनेन्द्र कुमार, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ संख्या- 158- 159
11. वही पृष्ठ संख्या- 390

❑❑❑❑